सत्संग परम संत हुजूर पुष्कर दयाल जी महाराज

(गुडगांव, सैक्टर–5, दिनांक 31 जनवरी 2016)

!!राधा–स्वामी!!
प्रेम का सौदा करो तुम प्रेम के व्यौहार में।
हानि और घाटा नही है, प्रेम के व्यौपार में।।
प्रेम में है स्वाद अदभुत, प्रेम का प्याला पियो।
हो के मतवाला विचरना, सीखो इस संसार में।
प्रेम से मन जीत लो, सबसे निराला शस्त्र है।।
जीत देखो अपनी पक्की, जय है इसके हार में।
मेरे दाता प्रेम दे, अपना ना दे तू कुछ मुझे।।
इसमे सुख है, मीठा रस मिलता है इसकी मार में।
राधा स्वामी ने बताया प्रेम की नौका चढो।।
पार जाओ डूबते हो, क्यों पडे मझधार में।
राधा स्वामी!

मालिक का रूप क्या है? मालिक का कोई रूप नही है। जितने भी फोटो बनाए हैं, राम का, कृष्ण का, शिव का, ये सब अपनी कल्पना से बनाए हैं। भगवान का कोई फोटो नही है, क्यों? क्योंकि उनका कोई रूप ही नही है। God क्या है? God को अंग्रेजी में बोलते हैं Super conceusness. तो उस मालिक का जो रूप है, वो प्रेम है। मालिक प्रेम के रूप में हमारे अंदर है। प्रेम कौनसा होता है? प्रेम वो नही जो हम अपने बच्चों के साथ करते हैं, उसको मोह बोलते हैं। जब आप संसार के सारे बच्चों को वैसा ही प्रेम करेंगे जैसा प्रेम आप अपने बच्चों से करते हैं, उसे बोलते हैं प्रेम। मालिक का रूप प्रेम है, और वो प्रेम के रूप में हमारे अंदर है। अंग्रेजी में कहते हैं– Love is god & God is love. मालिक प्रेम है और प्रेम हमारे अंदर छुपा बैठा है। प्रेम को जागृत करना होता है, और प्रेम को कौन जागृत करता है? प्रेम को जागृत गुरू ही करता है। और जब हमारा प्रेम जागृत हो जाता है, फिर हम भी वही बन जाते हैं। क्यों? मैने कहा ना, भगवान का रूप प्रेम है। जब हमारे अंदर प्रेम जागृत हो गया, फिर हम भी भगवान बन गए। इसलिए प्रेम का सौदा करो और प्रेम का व्यवहार करो। जब आप सबसे प्रेम करेंगे, जो भी आपसे मिलेगा, तब आपका रूप प्रेम का हो जाएगा, आपके अंदर प्रेम जागृत हो जाएगा, फिर आप भी वही भगवान बनोगे। लेकिन ये सब नही कर सकते हैं। गुरू नानक कहते हैं– लाखन मध्य मत गिनो, कोटिन में कोऊ एक। लाखों में नही करोडों में कोई एक होता है जिसके अंदर प्रेम जागृत हो जाता है। लेकिन ऐसी बात नही है कि करोडों में कोई एक होता है तो हम नही हो सकते, क्या पता करोडों में एक आप ही हो। इसलिए मन में कभी Negetive Thought मत लाना। हम भी बन सकते हैं भगवान। भगवान और कोई नही है, आसमान में भगवान नही लटक रहा है, भगवान हमारे अंदर है, और प्रेम के रूप में बैठा है। प्रेम को जागृत करो, तुम भी बन जाओगे भगवान। अंग्रेजी में कहते हैं–Self realization is god realization. अगर तुमको Realize करना है, भगवान कौन है? तो शुरू करो अपने आप से, तुम कौन हो? जब तुमको पता लगेगा तुम कौन हो? तुमको खुद ही पता जग जाएगा God कौन है? जब तुमको अपने आप की पता लगेगी, तुमको खुद ही पता लगेगा भगवान कौन है? भगवान हमारे अंदर है, किस रूप में? प्रेम के रूप में। लेकिन वो प्रेम हमारा सोया हुआ है। प्रेम को जगाना है, और प्रेम को गुरू ही जगाता है।

हमारा इस संसार में केवल एक ही रिश्तेदार है, वो है सतगुरूं संसार के सारे रिश्ते लेन देन के रिश्ते हैं। अगर आपने किसी से पैसा उधार लिया और उसको वापिस नही किया। तो अगले जन्म में वो आपकी लडकी बनकर आएगा और आपसे सारा वसूल करेगा। जितने भी रिश्ते हैं संसार में, ये सारे लेन देन के रिश्ते हैं। क्यों? हम जन्म क्यों लेते हैं? क्योंकि हमारे कर्म रह जाते हैं, उनको भुगतने के लिए हमें संसार में आना पडता है। अगर हमारे पास एक भी कर्म नही बचा, फिर हमें इस संसार में आना ही नही है, फिर हमारा मोक्ष है। हम आनंद की अवस्था में रहते हैं अपने मालिक के पास। लेकिन हमारे कर्म बाकी रह जाते हैं और उनको भोगने के लिए संसार में आना पडता है।

हमारे गुरू जी कहते थे–One mark less one year more, मतलब? हमको परीक्षा में पास होने के लिए 33 Marks लाने हैं, अगर हमारे 32 Marks आ गए। तो एक साल फिर वही किताबें, वही अध्यापक, वही स्कूल। इसी तरह जब हम जन्म लेते हैं, तो अपने कर्मों की टोकरी साथ लेकर आते हैं, जिन्हें प्रारब्ध कर्म बोलते हैं। कर्म दो तरह के होते हैं, प्रारब्ध कर्म और संचित कर्म। प्रारब्ध कर्म वो हैं जो हमने बुरे कर्म किए हैं और संचित कर्म वो हैं जो हमने अच्छे कर्म किए हैं। हमारी टोकरी में दोनो कर्म साथ–साथ चलते हैं। ऐसा नही है कि अच्छे कर्म +, - होकर, बाकी जो रह जाएँ, उनको हम भुगत लें। प्रकृति के कानून में ऐसा कुछ नही है, हमें अच्छे कर्म भी भुगतने हैं और बुरे कर्म भी भुगतने हैं। हमारा जन्म इस संसार में इसलिए हुआ है, क्योंकि हमें अपने प्रारब्ध कर्मां का भुगतान करना है। हम अपने कर्मों की टोकरी इसलिए लाए हैं कि उसको खाली करें। मालिक कहता है जाओ, ये कर्मों की टोकरी साथ दे रहा हूँ, इसे खाली करके आओ। लेकिन हमारी बदकिस्मती ये होती है कि हम उसको खाली नही करते हैं, और भारी कर देते हैं। और फिर से जन्म मरण का पक्का सौदा बनाते हैं। ये जन्म मिला हमको, अपने कर्मो की टोकरी खाली करो और चलो अपने घर। ये संसार हमारा घर नही है, हमारा घर मालिक के पास है, जहाँ कोई दुख नही, सिर्फ शांति ही शांति है, आनंद ही आनंद है, परम आनंद है। जितने भी दुख सुख हैं, इसी संसार में हैं, वहाँ ऐंसा कुछ नही है। इसलिए हमारा इस संसार में कोई रिश्तेदार नही है, सब लेन देन के रिश्ते हैं, और हैरानी की बात यह है कि जब लेन देन खत्म हो जाता है, तो उसी टाईम चले जाते हैं।

मेरे बेटे को अपनी पत्नी से बहुत प्रेम था। एक दिन बहु शाम को घर आई और कहने लगी मुझे बहुत तेज ठण्ड लग रही है। बेटे ने उसको Crocin दे दी। लेकिन ठण्ड बढती गई और बुखार चढ गया। फिर वो अपने पति से कहती है मुझे Bathroom ले चलो। पति ने उसको उठाकर Pot पर बिठाया, उसको उल्टी हो गई। बेटे ने उसको उठाकर बैड पर बिठाया,और बेटे ने पूछा कैसी तबीयत है? उसने जबाब दिया– मैं सोना चाहती हूँ, और उसने प्राण छोड दिए। एक सैकिंण्ड के लिए भी उसने नही सोचा, ये मेरा पति है, मुझसे कितना प्यार करता है, मैं इससे कितना प्यार करती हूँ। लेन देन पूरा हो गया, और छुटटी, चली गई। ये है संसार, ये हैं संसार के रिश्ते, जब वो जाता है, पीछे किसी का भी ख्याल नही करता है। तो क्या है ये संसार? इसी संसार की मोह माया में हम फँसे पडे हैं, और इसी मोह माया में हम दुखी रहते हैं। हमारे दुखों का कारण क्या है? यही मोह माया है। हमें कहा गया है कि तुम मुरगावी की तरह रहो। मुरगावी सारा दिन पानी में रहती हैं, लेकिन जब वो पानी से बाहर आती है, तो पानी का एक बूँद उस पर नही होता है। ऐसे ही हमको इस संसार में रहना है। हमें घर बसाने हैं, बच्चों को पढाना है, लिखाना है, उनकी शादियाँ करनी है, लेकिन मन में ये ख्याल रखो, ये बच्चा मेरा नही है, ये मालिक की देन है, किसी भी टाईम ले जा सकता है। अगर आप अपने मन में ये ध्यान रखोगे कि मेरा बच्चा है मुझे इसकी जिम्मेवारियाँ पूरी करनी है, लेकिन मुझे इसका मोह नही रखना है। क्यों? जब मालिक उसको आपसे छीन ले जाता है, तो हम बहुत दुखी हो जाते हैं। और अगर हमारे मन में ये बात है कि ये हमारा बच्चा नही है,

हमारा कर्तव्य था इसको पालना, इसकी शादी करना, और जब मालिक उसको उठाकर ले जाता है, तो हमको कोई दुख नही होता है। क्यों? क्योंकि हमको शुरू से ही पता था कि वो मेरा बच्चा नही है। ये संसार है, और इस संसार में कोई किसी का रिश्तेदार नही है, ये सारे रिश्ते नाते झूठे हैं। सब प्रारब्ध कर्मों के लेन देन के रिश्ते हैं। हमारा इस संसार में एक ही रिश्तेदार है, वो है मालिक। उसी को पकडो, फिर आपका जीवन सुखी रहेगा। कबीर साहब कहते हैं–

रहना नही देश वीराना है।
ये संसार कागज की पुडिया, बूँद पडे गला जाना है।।
ये संसार काँट की बाडी, उलझ–पुलझ मर जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधु, सतगुरू नाम ठिकाना है।

साल 2011 में जापान में एक सुनामी आ गई, और शहर में जितने भी बडे–2 मकान थे, सबको बहाकर ले गई। बडे–2 मकान खिलौनों की तरह तैरने लग गए। अब देखिए क्या है ये संसार? हम क्यों इस संसार पर विश्वास करें? काठमाण्डु शहर कितना सुंदर था, कितने बडे–2 मकान थे। सब कहते थे ये मेरा मकान है, ये मेरा मकान है। एक भूकंप का झटका आ गया, और वही आदमी जो अपना–2 मकान कहते थे, सामने सडक पर बैठे हैं और उनके सामने मकान का मलवा पडा है। तो क्या इस संसार पर हम विश्वास करें? कोई विश्वास नही करना। घर में सबकुछ रखो, टी.वी. रखो, फ्रीज रखो, मोटर कार रखो, लेकिन मन में ये रखो, ये मेरा टी. वी. नही है, ये मेरा फ्रीज नही है, ये मेरी मोटर कार नही है।

बकरी मैं–मैं करके, अपना गला कटावे।
मैना मैं–ना, मैं–ना करके, बेसन शक्कर खावे।।

बकरी मैं–मैं करती है, तो उसका गला काट देते हैं। कोई आदमी कहता है कि शहर में सबसे लम्बी कार मेरी है, बाहर सडक पर एक ट्रक आता है और कुचल कर जाता है, खत्म। क्या रह गया? क्या मेरी कार रह गई? सब कुछ भोगो इस संसार में, पैसा कमाओ ईमानदारी से, खर्च करो ईमानदारी से, सब कुछ करो, लेकिन मन में ये बात रखो, कि इस संसार में मेरा कुछ नही है। क्यों? जब हम लेकर आते हैं, कुछ लेकर नही आते हैं, और जब हम जाते हैं कुछ लेकर भी नही जाते हैं, सब कुछ यहीं छोडकर जाते हैं।

एक सेठ जी थे। बहुत बडा कारोबार था उनका। एक दिन उसने मुनीम से पूछा, मुनीम जी जरा मुझे बताओ कि कितना धन है मेरे पास। मुनीम जी ने Calculate करके बताया कि आपकी 7 पुश्त आराम से रह जाएंगी। सेठ जी को चिंता लग गई, मेरी आठवीं पुश्त क्या करेगी? और इसी चिंता में वो सूखने लग गए। वैद्य जी ने ईलाज किया, लेकिन ठीक नही हुए। फिर किसी ने बताया वहाँ जंगल में एक कुटिया है, वहाँ एक साधु रहता है, शायद वो आपका ईलाज कर दे। वो चला गया साधु के पास, और साधु के पास जाकर बैठ गया। इतने में एक आदमी आया आटा और दाल लेकर, और साधु से कहने लगा– बाबाजी आपके लिए आटा और दाल लेकर आया हूँ। बाबा ने कहा– दो डिब्बे हैं, एक आटे का और दूसरा दाल का, आटा आटे वाले डिब्बे में डालना और दाल दाल वाले डिब्बे में डालना। अगर वो डिब्बे भरे हों, तब मत डालना, फिर तुम वापिस ले जाना, तब मुझे नही चाहिए, क्योंकि मेरे पास आज के लिए हैं और मुझे कल की कोई चिंता नही है। अब सेठ जी सुन रहे थे। अरे इनको तो आज शाम के भोजन की भी चिंता नही है, मिले या ना मिले, और मैं अपनी आठ पुश्तों की चिंता कर रहा हूँ। तो ये है हमारा संसार, हम इसी मोह माया में फँसे रहते हैं, हमारी आठवीं पुश्त का क्या होगा? अरे! हमारी आठवी पुश्त क्या, हमारी पहली पुश्त अपना भाग्य लेकर आई है। जो उसके भाग्य में है, वो होगा, खुद कमाएगा।

पूत कपूत को क्या धन संचय।

अगर बेटा सपूत है तो उसके लिए आपको धन छोडने की कोई जरूरत नही है, वो खुद कमाएगा धन। अगर बेटा कपूत है, फिर कितना भी धन छोडो, वो बरबाद कर देगा। अपना–अपना भाग्य सब लेकर आए हैं। ये मत सोचो कि मैं अपने बेटे का भाग्य बना रहा हूँ। ना आप अपने बेटे का भाग्य बना सकते हैं, ना अपनी बेटी का भाग्य बना सकते हैं। सब अपना–अपना भाग्य लेकर आए हैं। जो उनके भाग्य में है वो होगा, और आपसे लेकर रहेंगे। क्योंकि ये सब लेन देन के रिश्ते हैं। वो आपसे लेने आया है और आपको देना पडेगा। अगर आप सोचेंगे कि मैं क्यों दूँ? फिर आपका कर्म बन गया, क्योंकि आपको देना है उसको, अपने कर्मों की टोकरी खाली करनी है, लेकिन आपने अपने कर्मों की टोकरी और भारी कर ली। तो ये जन्म हमको मिला है अपने कर्मों की टोकरी को खाली करना और वापिस अपने मालिक के पास जाना। ये संसार हमारा घर नही है, अगर ये संसार हमारा घर होता तो हम कभी मरते ही नही, यहीं इसी संसार में बैठे रहते। लेकिन हम मरते हैं, जीते हैं, क्यों? क्योंकि ये संसार हमारा घर नही है। और जो हमारा घर है, उसको बोलते हैं धुरपद धाम, वहाँ ना जीना है, ना मरना है, और ना वहाँ दुख है। वहाँ परमशांती, परम आनंद है, और वही हमारा लक्ष्य है। हमको अपने ध्यान में हमेशा यही रखना है कि ये ंससार हमारा असली घर नही है। इस ंसंसार में कोई सुखी नही है, सब दुखी हैं। गुरू नानक कहते हैं– नानक दुखिया सब संसार।

कबीर साहब कहते हैं– तन धर सुखिया कोई ना देखा।

तो फिर क्या ये सुखी संसार है। इतने बडे–2 महापुरूष कहते हैं कि इस संसार में कोई सुखी है ही नही, फिर हम कहाँ सुखी हैं? इस संसार में जितने मनुष्य है उतने ही प्रकार के दुख हैं। ये दुख कहाँ से आते हैं? ये दुख हमारी अपनी करनी है। हमने खुद ऐसे बीज बोये हैं, जो हम इस जन्म में दुखी हैं। हमने खुद पिछले जन्म में ऐसे बीज बोये हैं जो हम इस जन्म में दुखी हैं। जब महाभारत का युद्ध खत्म हो गया, तो धृतराष्ट्र ने भगवान कृष्ण से पूछा मैं अंधा क्यों पैदा हो गया? भगवान कृष्ण ने कहा– तुम पिछले जन्मों में जाओ। भगवान कृष्ण ने उसके सिर पर हाथ रखा और वो पिछले जन्मों में चला गया। जाते–2 वो पिछले 100 जन्मों में पहुँच गया, उसने कहा– अभी तो मुझे कुछ नही दिखा। तो कृष्ण ने कहा– और भी पीछे जाओ। तो वो 105 वें जन्म में पहुँच गया। वो 105 वें जन्म में क्या देखता है? उसके हाथ में तीर है, और वो किसी जानवर की आँखें फोड रहा हैं। ये 105 जन्म पहले की बात है, और फल कब मिला? ये फल उसे 105 जन्म के बाद आज इस जन्म में मिला। तो इस जन्म में हमारे जो भी सुख दुख हैं, ये हमने आज नही बोये हैं, इनका बीज हमने पिछले जन्मों में डाला है। अच्छे कर्म भी किए हैं उनका भुगतान अच्छा हो रहा है, बुरे कर्म भी किए हैं और उनका भुगतान भी हो रहा है। और जितना हम खुशी–2 अपने कर्मों को भोग लें, उतना हम जल्दी से मुक्त हो जाएँगे। अगर हम कर्मों को रोते–2 भुगतेंगे, तो हम और भी कर्म बना रहे हैं, अपने कर्मों की टोकरी को और भी भारी कर रहें हैं। ये जन्म मिला है तुमको, अपने कर्मों की टोकरी को खाली करने के लिए, तो हँसी–खुशी अपने सारे कर्मों को भुगत लो। कोई दुख आ जाए तो समझना ये मालिक का प्रसाद है। कोई सुख आ जाए, तो सुख में तो हम मालिक को याद करते ही नही हैं। लेकिन अगर कोई दुख आ जाए तो कभी दुखी नही होना। ये ध्यान में रखना, ये जो दुख मिला है इसका बीज मैंने खुद ही बोया है, और पता नही किस जन्म में बोया है। और उसका आज मुझे भुगतान हो रहा है। और उस दुख को आप खुशी–2 भुगत लेंगे, तो आपका कर्म हल्का हो जाएगा और कर्म भी कटते रहेंगे।

!! राधा–स्वामी !!